राज
कॉमिक्स
मूल्य 15.00 संख्या 114
बच्चों के दुश्मन
नागराज
का एक पोस्टर
मुफ्त
नागराज

लेखक : तरुण कुमार वाही
सम्पादक : मनीष चन्द्र गुप्त
कलानिर्देशक : प्रताप मुल्लीक
चित्रकार : चंदु, विनय

दिल्ली का एक व्यस्त बाजार दरियागंज। दरियागंज में स्थित राज पब्लिक स्कूल। छुट्टी की घंटी अभी बजी ही थी कि कक्षाओं से निकलकर बच्चे टिड्डी दल की तरह स्कूल के कम्पाउंड से गुजरकर मुख्य गेट की ओर लपके—
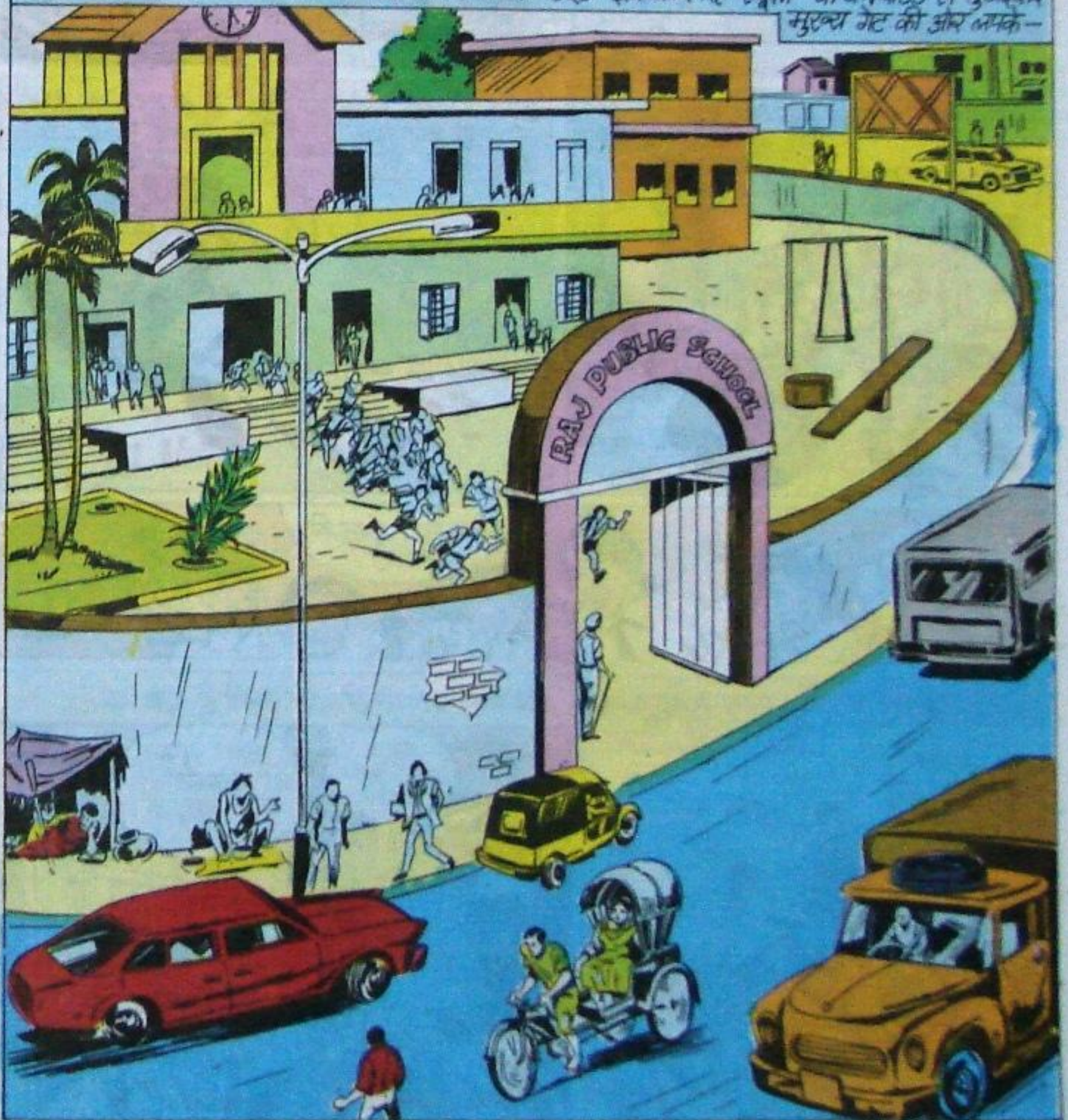
RAJ PUBLIC SCHOOL

और ठीक उसी समय स्कूल के बाहर सड़क पर से गुजरता सामान से लदा एक टैम्पू इतनी तेजी के साथ लहराकर मुड़ा कि...

...सामान से भरा एक बंडल ठीक स्कूल के मेन गेट के पास आ गिरा।
!
?
!
धप्प

झटके के साथ जमीन पर गिरने के कारण बंडल जगह-जगह से फट गया और चॉकलेट के कई पैकेट इधर-उधर छितरा गए।

चॉकलेट
अरे वाह! मुफ्त की चॉकलेट!

देखते ही देखते बच्चों के झुण्ड के झुण्ड उस बंडल पर टूट पड़े-
चॉकलेट की बरसात हुई है... अहा... यम..यम..यम!
लूटो... लूटो...!

और पलक झपकते ही बंडल खाली हो चुका था-
वाह! मजा आ गया!
अहा! मुफ्त की चॉकलेट... क्या स्वादिष्ट है!
अरे!

और निगाहें घुमाते ही जैसे उसे सांप सूंघ गया। कुछ पलों तक सन्नाटे की सी अवस्था में खड़ा रह गया वह। किन्तु फिर अगले ही पल उसके कंठ से एक जबरदस्त चीख उबल पड़ी–

ख.. खून... खून...! जहर.. चॉकलेट में जहर है...

फिर पागलों के समान वह उन बच्चों की तरफ लपका, जो चॉकलेट या तो खाने जा रहे थे या खाना शुरू कर चुके थे-
?
नहीं... नहीं बच्चो! चॉकलेट मत खाना। इसमें जहर है... फेंक दो चॉकलेट। मैं कहता हूं फेंक दो...!
?!

आनन-फानन में ही आसपास से गुजरते बहुत से लोग वहां एकत्रित हो गए। और बच्चों के हाथों से चॉकलेट छीन-छीनकर फेंकने लगे-
फेंको... फेंको इसे...इसमें जहर है!

जबकि उधर चौकीदार स्कूल के प्रिंसिपल के कक्ष में-
गजब हो गया सर... जल्दी चलिये! स्कूल के बहुत से बच्चों ने जहर भरी चॉकलेट खा ली है!
क्या...? ओह माई गॉड!

दरियागंज स्थित पुलिस स्टेशन-
हैल्लो... सब-इंस्पैक्टर नाथन हीयर... क्या? ओह नो... म...मैं पहुंच रहा हूं।

साइरन बजाती पुलिस जीपें व पैट्रोल गाड़ियां आंधी-तूफान की तरह घटनास्थल की ओर रवाना हो गईं-
पींऽऽ ई पींऽऽ ई

तत्पश्चात कई एम्बुलैंसों के साइरन भी बज उठे–
पीं ऽऽ पूँ ऽऽ पींऽऽ पूँ ऽऽ
हताहत बच्चों को तुरन्त एम्बुलैंस में डालकर अस्पताल पहुंचाया गया।
और उस शाम को समाचार पत्र, टी. वी, रेडियो इत्यादि संचार व्यवस्थाएं चीख उठीं–
सांध्य दैनिक
आतंकवादी कार्रवाही। करीब सात सौ बच्चे तीक्ष्ण विष से मारे गए... एक हजार की हालत गम्भीर।
आज के मुख्य समाचार– दिल्ली के कई स्कूलों पर एक साथ एक जैसा– जहरीला आक्रमण।
बच्चों को चॉकलेट में मिश्रित साइनाइड विष दिया गया। एक समाचार पत्र में आतंकवादियों द्वारा भेजे गए एक पत्र के अनुसार इस कार्रवाही की जिम्मेदारी जेबरा आतंकवादी संगठन ने ली है।
दिल्ली पुलिस तुरन्त सक्रिय हो उठी। रैड एलर्ट घोषित कर दिया गया। प्रत्येक ऐसे स्थान की जांच की जाने लगी, जहां से आतंकवादियों के शहर से बाहर निकलने का जरा सा भी संदेह था।

उधर अफ्रीका के एक गुलाम टापू से जनरल टा के आतंकवाद का खात्मा करने के बाद नागराज भारत की राजधानी दिल्ली पहुंचा। यहां वह होटल राज पैलेस के एक शानदार कक्ष में ठहरा हुआ था!
GOOD MORNING SIR ! आपका दूध और आज का समाचार पत्र!
GOOD MORNING! THANK YOU!

अखबार खोलते ही नागराज की निगाहें सुर्खियों पर चिपक कर रह गईं।
विश्वव्यापी जैबरा आतंकवादी संगठन दिल्ली में सक्रिय। उसका पहला निशाना मासूम बच्चे।

लगता है यहां भी मैं शांति के साथ नहीं रह सकूंगा! तब तक तो नहीं जब तक जैबरा का एक भी आतंकवादी यहां जीवित है!

तभी नागराज साथ वाले कमरे से आती उठा-पटक की आवाजें सुनकर चौंक उठा—
खड़ाक
ठांक
फटाक
मेरी छठी इन्द्री कह रही है कि साथ वाले कमरे में जरूर कोई गड़बड़ है।

और अगले ही पल वह अपने कक्ष की खिड़की से निकलकर साथ वाले कक्ष की खिड़की की तरफ रेंग रहा था।

जबकि साथ वाले कक्ष में—
जैबरा से गद्दारी करके कोई जीवित नहीं रह सकता टोनी!
सड़ाक
सड़ाक
आह!

बस गंजे ! हमारे पास ज्यादा वक्त नहीं है। इसे उठाकर खिड़की से नीचे फेंक दो।
नहीं !
गंजा टोनी को उठाने के लिए आगे बढ़ा—
चलो टोनी ! तुम्हें तुम्हारे बीवी-बच्चों के पास पहुंचा दें।
नहीं ! छ... छोड़ दो मुझे ! बचाओ... बचाओ ऽऽऽ

और अगले ही पल गंजे ने उसे पन्द्रहवीं मंजिल से नीचे उछाल दिया—
हा हा हा
आ आ आ आ

किन्तु, नागराज ऐसे हादसे से निपटने के लिए बिल्कुल तैयार था—

नागरस्सी गिरते हुए टोनी के शरीर से लिपट गई...
?
...और उसे वापस ऊपर खींचने लगी।

गंजे ने जब यह अविश्वसनीय दृश्य देखा तो उसने रिवॉल्वर निकालकर नागरस्सी पर कई फायर झोंक दिए—
धांय
धांय
लेकिन हड़बड़ाहट में सभी निशाने चूक गए।

और इससे पहले कि वह कोई और फायर कर पाता-
आह! सांप! सांप!
सांपों नें उसकी हिम्मत तोड़ दी थी-

उसके बाद नागराज ने उसे और शैतानी करने का अवसर नहीं दिया।
लड़ाक
!
!

गंजे के तीनों साथी नागराज को यूं एकाएक खिड़की पर प्रकट होते देख जड़वत हो गए।... फिर जब वे सोचने-समझने लायक हुए तो उन्होंने रिवॉल्वर निकाले और नागराज पर दनादन गोलियां चलाने लगे-
काश! बेचारे जानते होते कि मुझ पर गोलियां असर नहीं करती!
धांय
धांय
धांय
धांय

नागराज पर गोलियों का असर क्यों नहीं होता? जानने के लिए पढ़ें नागराज का प्रथम कॉमिक 'नागराज'

और शीघ्र ही उन्हें इस कटु सत्य का अहसास हो गया।
पूरे हो गए तुम लोगों के अरमान? अब मैं कुछ करता हूं।
?
?
?
पहले तो अपने यह खतरनाक खिलौने इधर दे दो!
नागरस्सी की मदद से नागराज ने तीनों के रिवॉल्वर झटक लिए।

और अब...
हाय!
ठाक
... मानवता के दुश्मनों का दुश्मन ...
ठडाक

... एक बार फिर ...
... मानवता की खातिर लड़ रहा था।
हाय!
धुम्म
उफ!

और जब वह इस कार्य से निवृत हुआ तो खिड़की से पुलिस सायरन की आवाज आने लगी -
आह!
उफ!
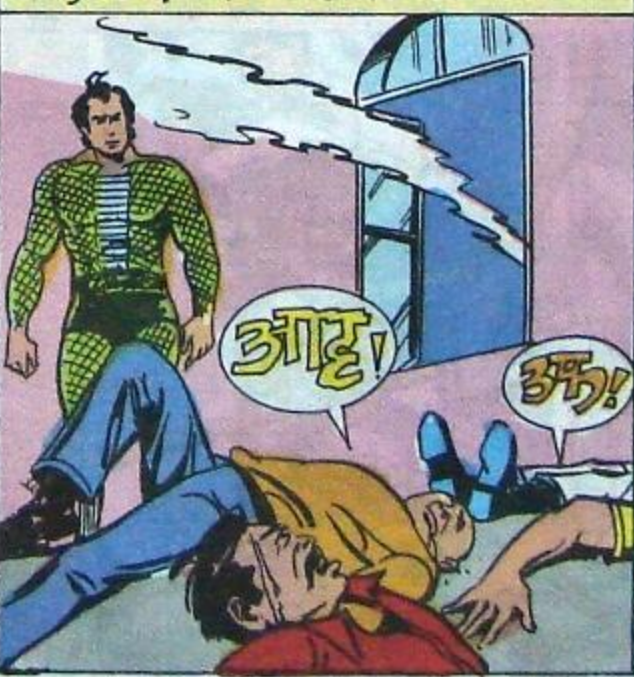
नागराज खिड़की की तरफ लपका -
लगता है गोलियों की आवाज सुनकर किसी ने पुलिस को बुला लिया है।

टोनी प्यारे! जल्दी यहां से निकल चलो! वर्ना पुलिस रोक लेगी।
चलो।
टोनी शीघ्रता से खिड़की पर चढ़ने की कोशिश करने लगा...

...लेकिन नागराज ने उसे रोक दिया और स्वयं भी खिड़की से नीचे उतर आया।
इधर से नहीं प्यारे! इधर से हवा में उड़कर जाएंगे। उस पार सामने वाली बिल्डिंग तक।
क्या? अरे भाई! मारना ही था तो बचाया क्यों था?

और इस बार नागरस्सी सामने वाली इमारत की छत की मुंडेर पर लिपट गई।
चलो! चुपचाप मेरी पीठ पर सवार हो जाओ। और कस कर पकड़ना!

टोनी को नागरस्सी से पीठ पर बांधकर नागराज नागरस्सी पर झूल गया-

और फिर सड़क को पार करते हुए...

...उसने सामने वाली इमारत पर पांव जमा दिए।
धप्प

दोनों अब पुराने किले की तरफ बढ़ रहे थे।

...उस दिन जैबरा का एक आदमी मुझसे मिला...

टोनी! तुम्हें आज यह बम अप्पूघर में बच्चों की भीड़ के बीच फेंकना है।

...मैंने अपना काम निपटाया...
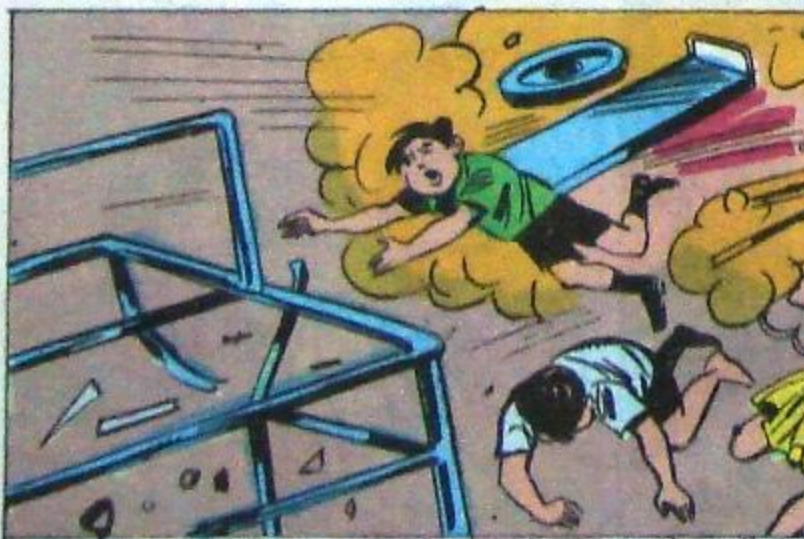
...सैंकड़ों बच्चे व बड़े उस बम काण्ड में मारे गए।...
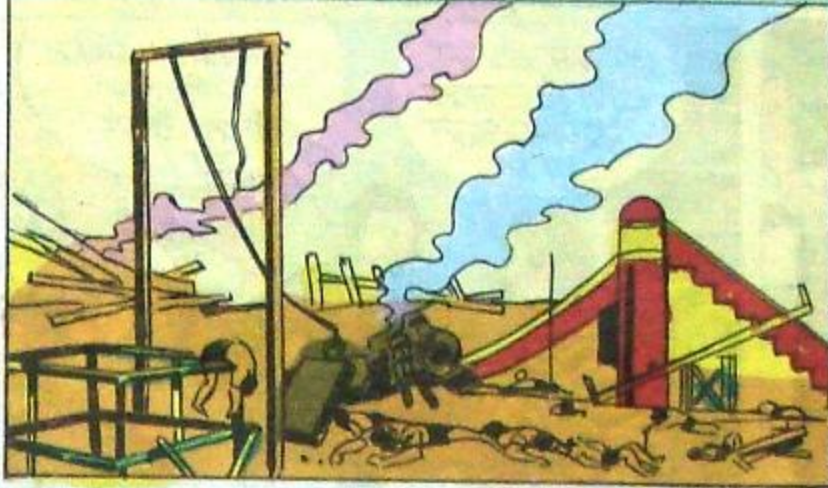
...फिर मैंने अपना मेहनताना लिया...
तुम्हारा काम हो गया।
शाबाश! यह लो एक लाख रुपया।

...और फिर जब मैं घर पहुंचा तो...
?
...घर के आगे लगी भीड़ को देख मेरा माथा ठनका।...

...मुझे पता चला कि मेरी पत्नी के साथ ही मेरी मासूम तीन वर्षीया पिंकी और राहुल भी उस बम-विस्फोट में मुझसे हमेशा के लिए छिन गए हैं।...
नहीं... ऐसा नहीं हो सकता। ऐसा नहीं हो सकता। पिंकी...राहुल...सुनीता।

मेरे बच्चो! उफ... हे भगवान! यह... यह क्या हो गया? प्रभु! आ...ह! म... मैंने अपने ही हाथों अपना हरा-भरा घर-संसार उजाड़ दिया।

...उस दिन के बाद मुझे अपने आप से भी नफरत हो गई। मैं जीना नहीं चाहता था, लेकिन मरने से पहले जेबरा सहित उसके पूरे संगठन का सफाया कर देना चाहता था...
तुम कातिल हो!
तुमने सैंकड़ों घरों की रोशनी लूटी है। आज तुम्हारे अपने घर में अंधेरा हो चुका है-हा...हा...हा...
अपने मासूम बच्चों के खूनी हो तुम! बीवी के हत्यारे हो।
नहीं, नहीं... नहीं...
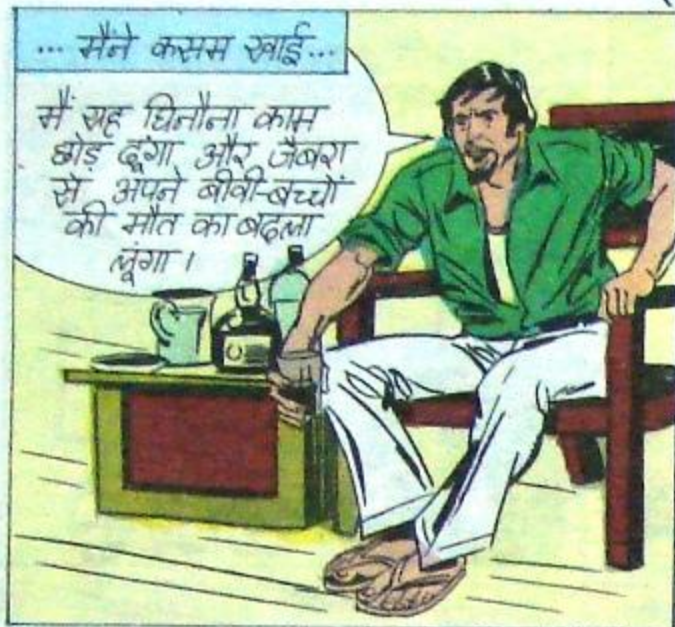
...मैंने कसम खाई...
मैं यह घिनौना काम छोड़ दूंगा, और जैबरा से अपने बीवी-बच्चों की मौत का बदला लूंगा।

...तब मैंने दो अन्य सदस्यों से जैबरा के बारे में जानकारी हासिल करनी चाही...
जो तुम जानना चाहते हो उसका परिणाम जानते हो?
हां मौत। लेकिन मेरी नहीं, उस शैतान जैबरा की।...

...और तभी से संगठन को मेरी तलाश है।
इसका मतलब जैबरा तक पहुंचने का रास्ता तुम नहीं जानते!

जैबरा तक हमें केवल चीता ही पहुंचा सकता है!
चीता!
हां, चीता! जैबरा का दाहिना हाथ है वह। दिल्ली की सर्वाधिक सुरक्षित तिहाड़ जेल में कैद है वह!

टोनी! भारत मेरी मातृभूमि है। और मैं अपने देशवासियों को जैबरा के आतंक से मुक्ति दिलाने के बाद ही दिल्ली से जाऊंगा!
नागराज, मैं हर कदम पर तुम्हारे साथ हूं।
तो फिर आओ मेरे साथ!
दोनों किले से बाहर निकल गए।

फिर वे एक टैक्सी में सवार तिहाड़ जेल की तरफ बढ़ रहे थे-
इस जेल की सुरक्षा व्यवस्था के बारे में तुम कुछ जानते हो?
हां, थोड़ा-बहुत, जो अपने दूसरे साथियों से सुना है।

नागराज! इस जेल की बीस फुट ऊंची चारदीवारी के ऊपर दिन-रात सिपाहियों का पहरा रहता है। और तुम्हारी मंजिल है वह टावर जिसकी कोई सीढ़ी नहीं है। उसकी छत पर ही कहीं कुख्यात कैदियों को चार स्टेनगनधारियों की निगरानी में रखा जाता है। चारों एक महीने तक ऊपर रहते हैं। एक महीने के बाद क्रेन की सहायता से दूसरे चार सिपाहियों को ऊपर भेजकर उन्हें नीचे लाया जाता है। सिपाहियों व कैदियों का खाना भी रोज ऊपर रस्सियों द्वारा भेजा जाता है।

CENTRAL JAIL

अगर हम टावर की छत पर हैलीकॉप्टर द्वारा पहुंच जाएं तो?
टावर के ऊपर अनधिकृत उड़ान भरते किसी भी हैलीकॉप्टर या विमान को ये मशीनगन द्वारा गिरा सकते हैं।

ओह ! इसका मतलब टावर के ऊपर मशीनगन भी है।
हां !

दोनों फिर एक टैक्सी में सवार हो गए -
बहुत मुश्किल जेल है।
हां तो तुमने चीता को छुड़ाने का विचार त्याग दिया।

जवाब में नागराज मुस्कराया और बोला -
मैं आज रात ही चीता को जेल से निकाल लाऊंगा।
क्या ?

रात के एक बजे नागराज का हैलीकॉप्टर तिहाड़ जेल के आसपास दिल्ली के ऊपर मंडरा रहा था -
तुम हैलीकॉप्टर में ही मेरा इंतजार करना !
ठीक है !

कुछ ही देर बाद हैलीकॉप्टर जेल से थोड़ी दूर मैदान में उतरा -
WISH YOU BEST OF LUCK NAGRAJ !
और नागराज चल पड़ा एक और खतरनाक मिशन पर

जैसे ही चारदीवारी के ऊपर घूमते सिपाही एक दूसरे से विपरीत दिशा में जाने लगे...
JAIL
...नागराज भागकर दीवार के पास पहुंचा...

...और दीवार पर रेंगने लगा -

कुछ ही क्षणों में वह ऊपर पहुंच गया -

फिर वह जेल के अंदर की दीवार पर रेंगने लगा -
ओह ! सिपाही के पलटने से पहले नीचे पहुंच जाऊं। नहीं तो व्यर्थ का हंगामा होगा।

दीवार से नीचे उतरकर उसे वहीं रुक जाना पड़ा -
उफ ! यह सर्चलाइटों की रोशनी सारे मैदान में घूम रही है। इससे बचकर ही टावर तक पहुंचना होगा।

कुछ देर वहीं रुककर वह सर्चलाइट के दायरों की गति व दिशा का अध्ययन करता रहा। और इस बार जैसे ही दायरा उसके सामने से निकला उसने जीप की तरफ दौड़ लगा दी।
पच्चीस गिनने तक मुझे जीप तक पहुंचना होगा

सर्चलाइट का दायरा नागराज की तरफ आया किन्तु
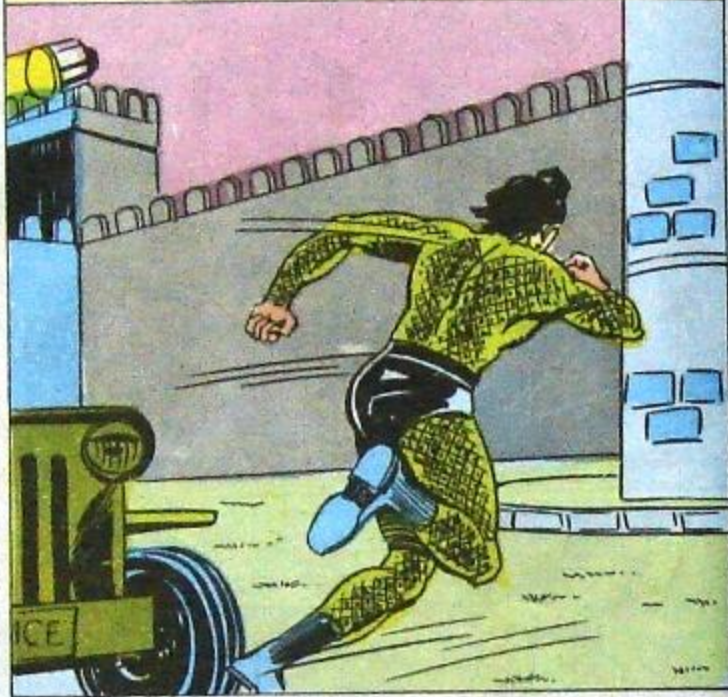
बाल बाल बचा!

नागराज सुरक्षित जीप के नीचे पहुंच चुका था।

और अगले क्षण एक बिजली सी चमकी...
...और उस चमक के समाप्त होते ही बेहोश हो चुके थे तीन सिपाही। और नागराज चौथे सिपाही पर बरस रहा था-
बता चीता कहां कैद है?
आह!

नागराज की कहर ढाती आवाज ने उसे बोलने पर मजबूर कर दिया -
यहां इस जाल के नीचे कैद है वह !

चाबी कहां है इसकी ?
जेलर के पास ।
इस बीच नागराज की चमकदार आंखें उसे सम्मोहित कर चुकी थीं ।

अब तुम चुपचाप यहां खड़े रहो। आधे घंटे बाद जब होश में आओगे तो सब भूल चुके होगे !

फिर वह लोहे के जाल की तरफ बढ़ा -
इस जाल को बाहुबल से ही उखाड़ना होगा ।

उफ बहुत मजबूत जाल है।
ठक

नीचे जाने के लिए सीढ़ियां बनी हुई थी-
उफ ! घुप्प अंधेरा है।

किन्तु मैं तो अपने नागनेत्रों द्वारा अंधेरे में भी देखने में सक्षम हूं।

नागराज की निगाहें चीता को तलाशने लगीं-
चीता ! कहां हो तुम ? मैं तुम्हें छुड़ाने आया हूं।

तभी चीता की आवाज उस अंधेरे को चीरती हुई सुनाई दी-
कौन है वहां ? मैं यहां हूं।

नागराज उसके पास पहुंचा-
क्या तुम ही चीता हो ?
हां !
जैबरा ने मुझे तुम्हें छुड़ाने के लिए भेजा है।
ओह ! तो जल्दी करो ना !

नागराज ने जंजीरें पकड़ीं...

...और बारी-बारी से अपनी बलिष्ठ बाजुओं की मदद से उन्हें दीवार में से उखाड़ दिया—
कमाल का बलशाली है।
खड़ाक
...और चीता जंजीरों की कैद से मुक्त हो गया –
अंधेरे में भी कैसे काम कर रहा है यह?
जल्दी चलो! हमारे पास समय बहुत कम है।
दोनों ऊपर पहुंचे–
यहां से नीचे कैसे जाएंगे हम?
चुपचाप सब देखते जाओ।
नागराज ने कलाइयों से नागरस्सी छोड़ी–
अकेले ही सब सिपाहियों को बेहोश कर दिया बिना हथियार के और यह मूर्ति बना कैसे खड़ा है?
श... शाां
नागरस्सी चारदीवारी के साथ बने सर्चलाइट टावर से लिपट गई।
हाए! मैं कहां हूं? यह मुझे क्या हो गया था?
चीता, हम इस रस्सी के सहारे जेल की चारदीवारी तक जाएंगें। तुम तैयार हो?
हां, मैं तैयार हूं!
इस बीच चीता द्वारा झिंझोड़े जाने से सिपाही का सम्मोहन टूट चुका था–

चीता नागरस्सी को पकड़कर लटक गया-
अरे, ये दोनों कौन हैं? इन्हें रोकना होगा।
जरा सावधानी से जाना चीता, रस्सी हाथ से ना फिसल जाए!
अजीब सी गिलगिली सी रस्सी है यह!

नागराज भी चीता के पीछे नागरस्सी पर लटक गया। उस सिपाही से बेखबर जिसने उन पर मशीनगन तान दी थी-
रुक जाओ दोनों, वरना गोली मार दूंगा!
ओह! लगता है सिपाही होश में आ गया है!
इसने यह रस्सी वहां तक बांधी कैसे? जादूगर लगता है यह!

दोनों को न रुकता देख सिपाही ने मशीनगन का मुंह खोल दिया-
तड़... तड़ तड़

जिंग जिंग
ओह! वह मशीनगन चला रहा है। मुझे चीता को अपनी आड़ में रखना होगा!

परन्तु दूसरी तरफ गोलियों की आवाज से सारी जेल में भगदड़ मच गयी थी-

अरे, क्या हुआ? ये गोलियां क्यों चल रही हैं टावर पर से?

कुछ दिख भी तो नहीं रहा!

खतरे का सायरन बजाओ!

ऊपर सर्चलाइट की रोशनी डालो!

तभी सर्चलाइटों का प्रकाश उनकी तरफ घूमा और वे रोशनी में नहा गए–
उफ !

सर्चलाइट टावर पर खड़े सिपाही अब उनके नीचे आने का इंतजार कर रहे थे–
आने दो इन्हें, जैसे ही नीचे आएंगे दबोच लेंगे!

इधर चीता ने जैसे ही अगला हाथ आगे बढ़ाया उसकी नजर नाग के मुंह पर पड़ी–
अरे, बाप रे सांप! मैं तो मर गया रे!
किसी ने सही कहा है कि सांप को अचानक देखने से बड़े-बड़े सूरमाओं की हवा खिसक जाती है।

किन्तु नागराज हरदम सतर्क रहता है। उसने लपककर चीता को बांहों में भर लिया–
डरो मत और मुझे कसकर पकड़ लो!

जेलर भी अब तक टावरपर पहुंच चुका था।
हम भाग नहीं सकते!
स्वागत की पूरी तैयारी है!
आओ बेटा! तिहाड़ से भागोगे?

किन्तु उन्हें पकड़ने की इच्छा जेलर के मन में ही रह गई–
तड़ाक
आह!
नागराज की करारी लात ने उसे टावर के नीचे दीवार पर उछाल फेंका।

और इससे पहले कि बाकी सिपाही कुछ कर पाते नागराज व चीता उनपर कहर बनकर टूट पड़े-

धाड़

ठाक

किन्तु जेल में सिपाहियों की संख्या बहुत अधिक थी, वे सब टावर का घेराव कर रहे थे।

ये तो बढ़ते ही जा रहे हैं और समय बरबाद किया तो हो सकता है बाहर से भी सहायता आ जाए। भागना ही बेहतर रहेगा।

इधर चीता भी यही सोच रहा था। अत: उसने टावर से छलांग लगा दी-

और नागराज यह देखकर दंग रह गया कि न केवल वह सही-सलामत जमीन पर पहुंच गया बल्कि एक तरफ भाग भी निकला-

यह तो वाकई चीते की तरह फुर्तीला है।
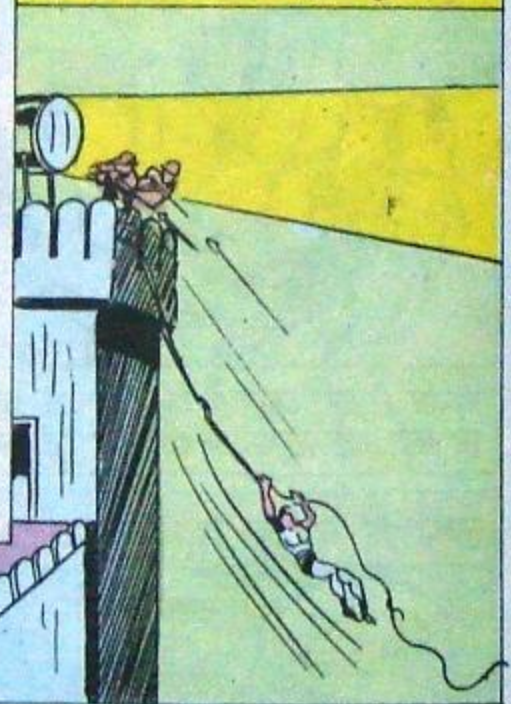
फिर नागराज भी वहां नहीं रुका-

और जिस समय पुलिस की पैट्रोल जीपें उन्हें सड़कों पर खोज रही थीं...

...वे हैलीकॉप्टर में बैठ अभेद्य कही जाने वाली उस जेल से बहुत दूर जा चुके थे-
चीता, किंग जैबरा के आदेशानुसार हमें तुम्हें जेल से छुड़ाना था। अब तुम हमें अड्डे तक का रास्ता बताओगे तो हम तुम्हें सुरक्षित वहां छोड़ देंगे।
जरूर दोस्त! हैलीकॉप्टर सूरज कुण्ड की निर्जन पहाड़ियों की ओर ले चलो।

शीघ्र ही हैलीकॉप्टर एक निर्जन पहाड़ी स्थल पर मंडरा रहा था-
टोनी! यहां पर दो चक्कर सीधे लगाकर एक चक्कर उल्टा काटो और फिर तीन बार लाइट आन-आफ करो, तभी तुम यहां पर सही-सलामत उतर सकोगे।

टोनी ने वैसा ही किया भी, जो कि शायद कोई गुप्त संकेत था-

जवाब में नीचे से भी लाल रोशनी दिखाई दी।

फिर नीचे रोशनी में नहाया एक हैलीपैड नजर आने लगा-
टोनी! रास्ता साफ है, हैलीकॉप्टर उतार दो।
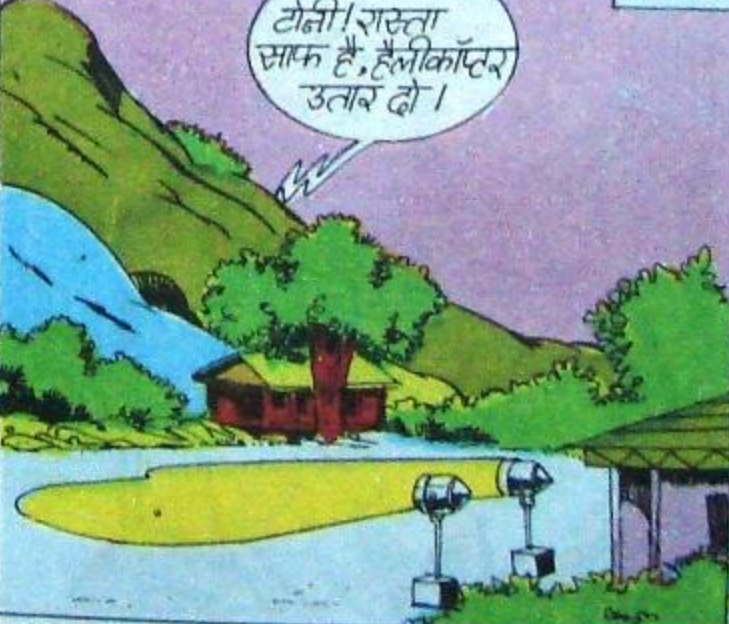
टोनी ने हैलीकॉप्टर नीचे उतार दिया-

कुछ ही देर बाद वे तीनों एक अंधेरे हॉल में खड़े थे-
यह अंधेरा क्यों है?
बस किंग जैबरा के आते ही यहां रोशनी हो जाएगी।

और तभी रोशनी के साथ किंग जैबरा हॉल में प्रकट हुआ।
आओ नागराज! हम तुम्हारा ही इन्तजार कर रहे थे! और यकीन जानो कि तुम यहां अपनी मरजी से नहीं आए हो। होटल राज पैलेस पर मेरे आदमियों से मुठभेड़ के बाद से यहां पहुंचने तक की तुम्हारी कोई गतिविधि मुझसे छुपी नहीं थी।

तुमने अपनी मौत को स्वयं अपने घर आने का निमंत्रण दिया है जैबरा! मैंने कसम खाई है कि तुम जैसे आतंकवादियों को चुनचुन कर मारूंगा।

नागराज का यह बदला हुआ रूप देखकर चीता को जैसे होश आया।
तुम मूर्ख हो चीता...
किंग, मैं कुछ समझा नहीं! इसने तो आपके कहने पर मुझे जेल से छुड़ाया है।

...इस शख्स ने केवल हमारे अड्डे तक पहुंचने के लिए ही इस गद्दार तेनी से मिलकर तुम्हें जेल से छुड़ाया है। वरना यह तो हम जैसे लोगों का पक्का दुश्मन नागराज है।...

धूम

धाड़

इस बीच जैबरा वहां से निकल चुका था-

धड़ाम

ढिशूम
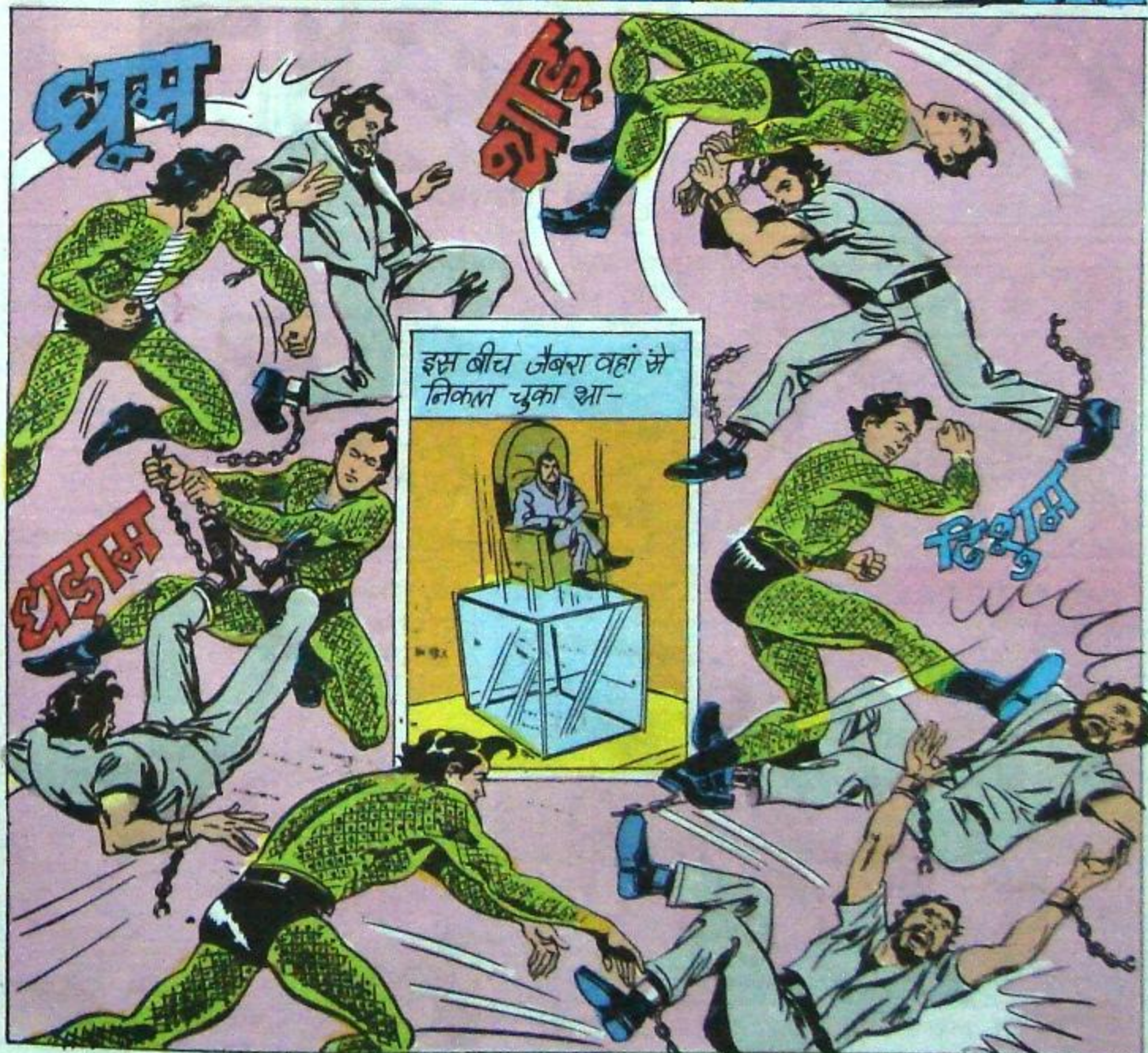
नागराज के धुआंधार वारों से चीता बेदम हो चुका था –
हाय! मुझे छोड़ दो!
तुझे सिर्फ जैबरा के बदले छोड़ सकता हूं। मुझे उस तक पहुंचने का रास्ता बता दो!
और फिर चीता उसे सब कुछ बताता चला गया।

क्रोधित नागराज ने अपनी दोनों खड़ी उंगलियों का वार उसकी आंखों पर किया –
आऽऽऽ
जा नीच! जब तक पुलिस नहीं आ जाती यहीं अंधेरे में भटकता रह!

नागराज टोनी के साथ दीवार की तरफ बढ़ा और उसने चीता द्वारा बताया गुप्त बटन दबा दिया –
फलस्वरूप दीवार में मार्ग नजर आने लगा। दोनों आगे बढ़ चले।

उस गलियारे में बढ़ते हुए दोनों हैलीपैड तक पहुंच गए जहां उनका हैलीकॉप्टर जैबरा के आदमियों के कब्जे में खड़ा था –
टोनी! कहीं चीता ने हमें गलत कोड तो नहीं बता दिया?
हम तब भी इनसे निपटने के लिए तैयार हैं!

हैलीकॉप्टर के करीब पहुंचते ही उन्होंने दोनों को रोका –
अपना कोड नम्बर बताओ!
ZBR 666!
कोड नम्बर सुनते ही वे संतुष्ट हो गए।

और अगले ही क्षण दोनों हैलीकॉप्टर द्वारा आकाश में उड़ रहे थे।
टोनी! सड़क की तरफ बढ़ो! अभी वह ज्यादा दूर नहीं गया होगा।

और सच्चाई यह थी... यह चमत्कार उन अनगिनत सर्पों का था जो नागराज के जिस्म में वास करते थे –

और अगली सुबह दिल्ली वासियों के लिए अचंभा भरी थी। दरियागंज पुल पर जैबरा का बेहोश जिस्म टंगा था...

राज कॉमिक्स

RAJ comics
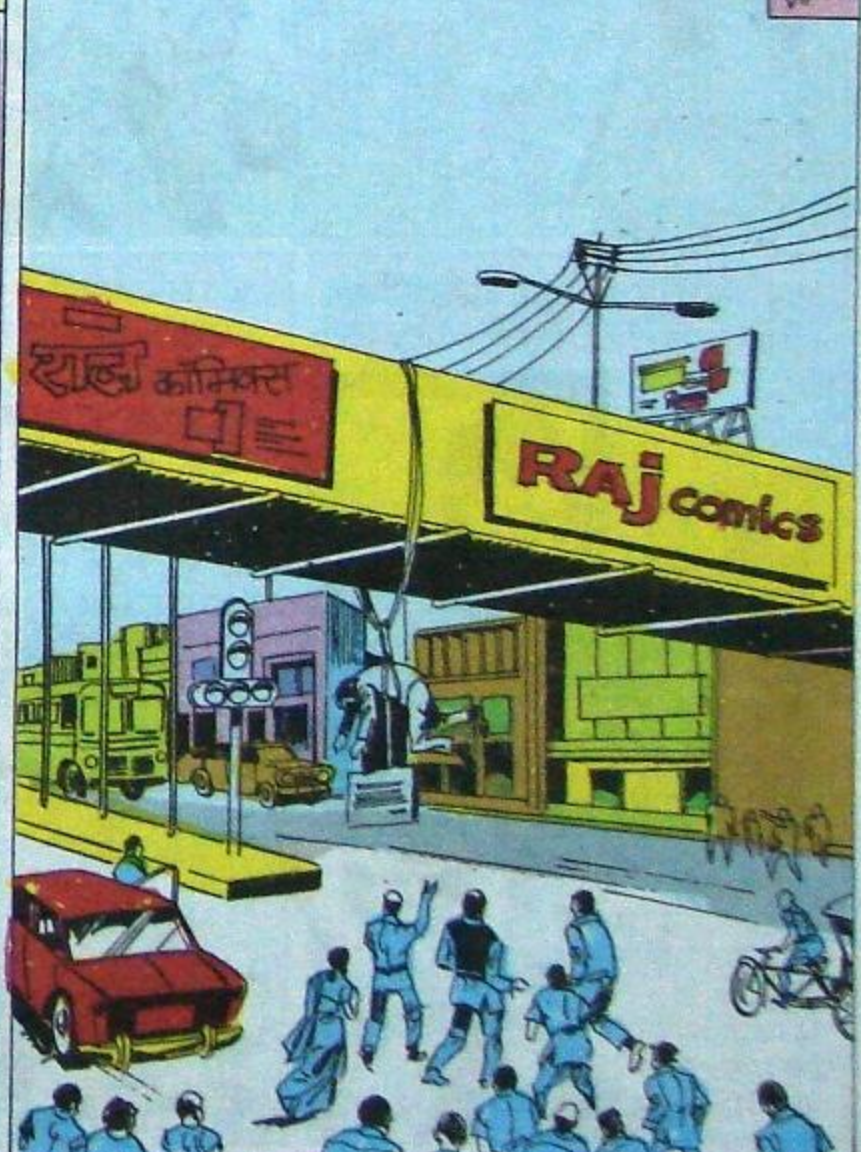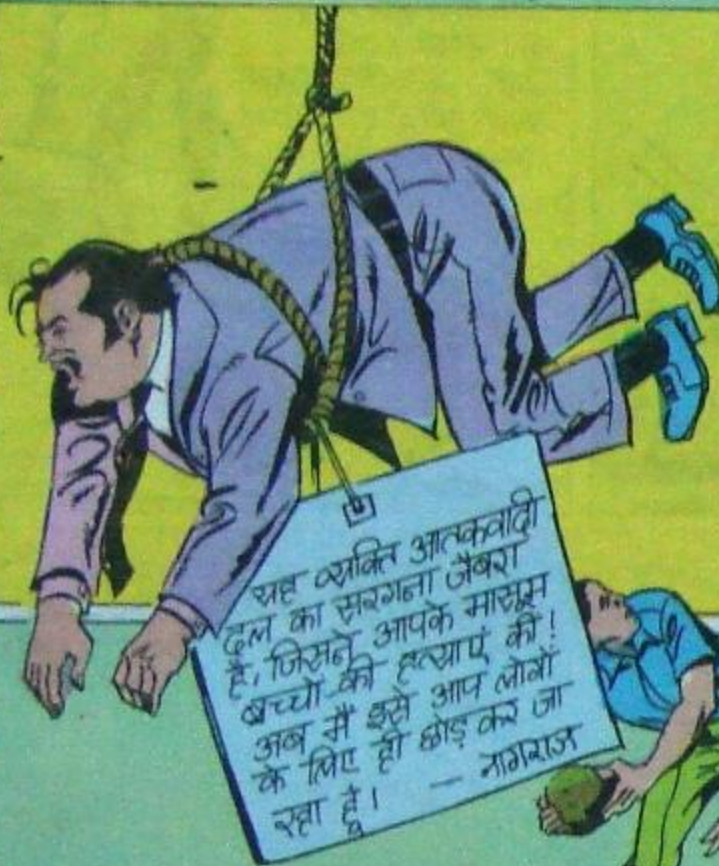
...और उस पर यह पोस्टर लटका हुआ था-
यह व्यक्ति आतंकवादी दल का सरगना जैबरा है, जिसने आपके मासूम बच्चों की हत्याएं कीं! अब मैं इसे आप लोगों के लिए ही छोड़ कर जा रहा हूं। — नागराज
किसी ने यह दृश्य देखते ही पुलिस को फोन कर दिया था। किन्तु पुलिस के पहुंचने से पहले ही जैबरा क्रोधित भीड़ का शिकार बन चुका था। लोगों ने पत्थर मार-मारकर उसे जान से मार डाला था-
उधर नागराज के कहने पर टोनी एक पब्लिक टेलीफोन बूथ में प्रविष्ट हुआ-
हैलो! कमिश्नर साहब! खूंखार आतंकवादी जैबरा के ठिकाने का पता नोट कर लीजिए!...
और पता बताने के बाद जब वह बूथ से बाहर निकला तो नागराज का कहीं पता न था-
ओह नागराज! तुम दिल्लीवासियों को छोड़कर चले गए। लेकिन कोई बात नहीं। 'अपराध के खिलाफ तुम्हारी इस जंग का एक सैनिक मेरे रूप में अभी भी यहां मौजूद है। मैं कसम लेता हूं कि मेरे रहते दिल्ली में अब कोई नया जैबरा सिर नहीं उठा सकेगा'।
समाप्त